अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जून-2022

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–दूसरा | जून–2022

विछोड़ा 3
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सेहत 13
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

अनुशासन 21
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

भजन-अभ्यास 30
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

एक कहानी 31
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 243 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

कृपाल दा विछोड़ा

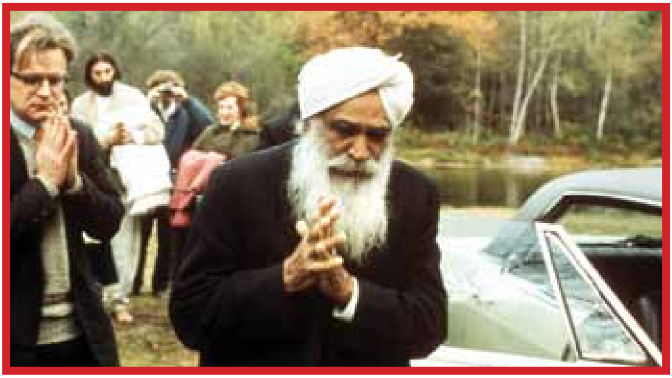

कृपाल दा विछोड़ा मेरी, हड्डियाँ नूं खा गया,
मंगया सी प्यार ते, विछोड़ा झोली तूं पा गया x 2

1 दाता, भुल्लां तैनूं किवें कोई, माड़ी-मोटी गल्ल नहीं,
भुल्लां तैनूं किवें कोई, माड़ी-मोटी गल्ल नहीं, x 2
मुड़-मुड़ नाम तेरा, बुल्लियाँ ते आ गया
मंगया सी प्यार.....

2 कीता तैनूं प्यार ओहदे, बदले च गम मिले, x 3
जिंदगी नूं गम, झोरा हड्डियाँ नूं खा गया,
मंगया सी प्यार.....

3 सुणदा हाँ खड़ाक जदों, किसे दा मैं सच्ची-मुच्ची, x 3
लगदा है शायद मेरे, वेहड़े तुहिओं आ गया,
मंगया सी प्यार.....

4 खोल कुंडी, तक 'अजायब' खड़ाक जेहा होया कोई x 3
करके तरस घर, कृपाल तां नहीं आ गया,
मंगया सी प्यार.....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

विछोड़ा

05 जनवरी 1990 गुरु नानकदेव जी की बानी 16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान) DVD - 553 (2)

हाँ भई, रोज की तरह आज भी आपके आगे गुरु नानकदेव जी की बानी रखी जा रही है, यह बानी सारंग की वार में से है। सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे जब भी संसार में आते हैं बेशक वे दूर–दूर तक न गए हों फिर भी उन्हें दुनिया की जानकारी होती है कि दुनिया क्या कर रही है, समाज क्या कर रहे हैं, ये लोग प्रभु को छोड़कर किस तरफ जा रहे हैं?

कलयुग में कबीर साहब इंसानी जामें में आए, वे बनारस के आस–पास ही रहे ज्यादा दूर तक नहीं गए। जब हम उनकी बानी पढ़ते हैं तो हमें पता लगता है कि उन्हें संसार के जीवों का कितना ज्ञान था। प्रभु हर इंसान के अंदर है और हर इंसान प्रभु से मिलने का हकदार है फिर भी लोग प्रभु को पत्थर, पानी और धर्मग्रंथों में ढूंढते फिरते हैं।

गुरु नानकदेव जी के समय में भी यात्रा करने के ज्यादा साधन नहीं थे, उस समय हिन्दुस्तान के लोग ज्यादातर पैदल ही सफर किया करते थे फिर भी आप ज्यादा से ज्यादा समाजों में गए। आप बगदाद, लंका, मक्का, सउदी अरब में भी गए। आपका इतने कष्ट उठाकर यात्रा करने का यही मकसद था कि आप जिस परमात्मा से **विछुड़कर** आए हैं वह परमात्मा 'शब्द–नाम' की कमाई करने से मिलता है। पूरा सतगुरु ही हमारे अंदर 'शब्द–नाम' टिका सकता है, प्रभु आपकी आत्मा का परमात्मा है।

तूती की नक्कारखाने में कौन सुनता है? महात्मा समझा–समझाकर चले जाते हैं लेकिन यह दुनिया अजीब किस्म की है। जब मालिक के प्यारे संसार में आते हैं तो हम उनकी कद्र नहीं करते उन्हें आराम से बैठने नहीं देते। जब महात्मा संसार से चले जाते हैं तो वे जिस जगह बैठे होते हैं हम

उस जगह के साथ बँध जाते हैं। जहाँ कहीं महात्मा की खड़ाव या जूता रखा हो तो हम उनके खड़ाव या जूते की पूजा करने लग जाते हैं। हम दुनिया में आकर यार-दोस्तों और परिवार के साथ प्यार करते हैं अगर हम किसी मुल्क के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति भी बन जाएं तो हम चाहते हैं कि आम मुल्कों के साथ हमारी दोस्ती बने।

कहने का भाव हम जीव जहाँ-जहाँ बैठे हैं हमने मकड़ी की तरह अपना जाल बनाया हुआ है। जिस समय मकड़ी को मौत का देवता छिपकली झपट मारती है उसके जाल में जो बच्चे होते हैं, उनकी कोई रक्षा नहीं कर सकता। गुरु नानकदेव जी महाराज यह नहीं कहते कि यह दुनिया बुरी है, आप इस दुनिया को छोड़ दें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दुनिया अच्छी है लेकिन आप इसे अपना न बनाएं, जब हम इस दुनिया को अपना बनाने लगते हैं तो हम इसके जाल में फँस जाते हैं।''

परमात्मा दया करके हमें धन-दौलत, यार-दोस्त देता है लेकिन हम देने वाले का शुकर नहीं करते बल्कि दातों का ही शुकर करते हैं। हमें चाहिए तो यह था कि हम इनके साथ मिलकर अपनी जिंदगी का सफर आसान बनाएं। सदा ही अपने मकसद को आँखों के आगे रखें कि हम यहाँ पर एक मेहमान की तरह हैं आखिर हमारा घर, हमारी मंजिल कोई और है।

गुरु नानकदेव जी समझाते हैं क्या हुआ अगर हमने कई पार्टियाँ बना ली, लाखों लोगों के साथ दोस्ती कर ली। अपने आस-पास सलाम करने के लिए अनेकों ही पलटने खड़ी कर ली अगर परमात्मा के दरबार में जाकर हमारी आबरू न रही तो ये चीजें हमारे किस काम आएंगी?

बेशक प्रभु हम पर दया करके हमें कितनी भी लम्बी उम्र क्यों न दे दे। कलयुग में आमतौर पर औसतन उम्र सौ साल की है लेकिन हम ज्यादा से ज्यादा साठ साल में ही आगे जाने की तैयारी कर लेते हैं। आप बूढ़ों से मिलकर देख लें जो सौ साल से भी ज्यादा के हो गए हैं, उन्हें कानों

से सुनना बंद हो जाता है, उनके दाँत जवाब दे जाते हैं। मेरा जाति तजुर्बा है मुझे ऐसे लोग मिलते हैं जो एक सौ बीस या एक सौ पच्चीस साल के हैं लेकिन फिर भी वे अपने लड़कों से कहते हैं, ''हमारे कान में सुनने वाली मशीन लगवा दें, हमारे दाँत लगवा दें, हमें किसी अच्छे डॉक्टर के पास ले जाकर हमारा इलाज करवाएं ताकि हम अपने पोते-पड़पोते की शादी-ब्याह देख जाएं।

मैं एक बार गंगानगर गया वहाँ एक काफी बुजुर्ग माता थी, वह मेरे पास आकर बैठ गई। मैंने सोचा बुजुर्ग है इसे बैठे रहने दें और लोग मिलकर चले गए। उसका लड़का आया उसने मुझसे कहा कि हमारी माँ की फरियाद भी सुनें, यह काफी देर से बैठी है। मैंने उस माता से पूछा, ''तू बता?'' वह बूढ़ी गुस्से में एटम बम की तरह फूटकर बोली, ''देखो बाबा जी, मुझसे सब यही कहते हैं कि माँ तूने किसी काम से क्या लेना है? तू सतगुरु-सतगुरु कर। मैं अब बुजुर्ग हो गई हूँ मैं सतगुरु-सतगुरु करूं?'' वहाँ संगत में जो लोग बैठे थे, वे हँसने लगे।

धर्मग्रन्थों में, सतयुग में उम्र एक लाख साल लिखी है, त्रेता में उम्र दस हजार साल, द्वापर में उम्र एक हजार साल और कलयुग में सौ साल की उम्र औसतन निकाली गई है। जो एक लाख साल जीवित रहे उनका भी एक दिन इस दुनिया से **विछोड़ा** हुआ और जो दस हजार साल जीवित रहे आखिर उनका भी विछोड़ा हुआ, वे भी दुनिया का सामान या दुनिया की धरती साथ लेकर नहीं गए। इसी तरह सब भरे बाजार को छोड़कर चले गए। गुरु नानकदेव जी महाराज का यह शब्द सुनने वाला है, आप इसी विषय पर प्यार से समझा रहे हैंः

लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ।।
विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा एक घड़ी महि जाइ।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर आप लाखों साल जी लिए, लाखों साल खुशियाँ मनाते रहे फिर भी एक दिन आप विछोड़े का मुँह देखेंगे। जब **विछोड़ा** होगा तो दुनिया का सब सामान, परिवार सब कुछ जहर की तरह नजर आएगा लेकिन हम सबकी तरफ देखकर आँखें बंद कर लेते हैं।''

जे सउ वरिआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा खाइि।।
मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइि जाइि।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''बेशक आप सौ साल मीठे भोग ऐशों–इशरतें करते रहें फिर भी एक दिन आपको दुख का मुँह देखना पड़ेगा। आप कितनी भी तंदरूस्ती भोग लें फिर भी एक दिन बीमारी का मुँह देखना पड़ेगा। आप चाहे संसार में कितनी भी देर रह लें आखिर एक दिन हमें मौत का मुँह देखना ही पड़ता है।''

सन् 1947 में जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय हमारी फर्स्ट पटियाला की पलटन को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को सलामी देने का मौका मिला। उस समय हम तकरीबन दो महीने लाल किला में रहे। एक दिन हमारे अफसरों ने कहा कि आप लोग दिल्ली में जो यादगारें हैं उन्हें देखें, लाल किला भी अच्छी तरह देख लें। वहाँ हमें एक गाइड मिला उसने हमें अच्छी तरह से लालकिला दिखाया और बताया कि यह दिवान–ए–आम और यह दीवान–ए–खास है। यह बादशाह का नाचघर तख्ते–ए–तौश है। यहाँ बादशाह का मनोरंजन करने के लिए नाच होता था, यहाँ हीरे–पन्ने लगाए हुए थे जिन्हें बाहर की हुकूमतों ने निकाल लिया है।

उस समय बिजली के इतने साधन नहीं थे, दो हौद बने हुए दिखाए। एक नल में से गर्म और दूसरे नल में से ठंडा पानी आता था। वह मकान भी दिखाया जिसमें बादशाह सलामत अपने कपड़े बदलता था, वह मकान बहुत कीमती पत्थर से बना हुआ है। गाइड ने बताया कि आखिरी समय में शाहजहाँ को उसके ही लड़के औरंगजेब ने कैद कर लिया। शाहजहाँ को

पीने के लिए पूरा पानी और खाना नहीं मिलता था। उसे बहुत सख्त कष्ट दिए गए, वह आगरा की जेल में मर गया। शाहजहाँ का बेटा औरंगजेब बहुत कट्टर था उसने हिन्दुओं का बहुत कत्ल–ओ–गारत किया।

एक बार शाहजहाँ ने औरंगजेब को पत्र लिखा कि तू जिन हिन्दुओं को मार रहा है ये तो अपने मरे हुए माता–पिता का भी श्राद्ध करते हैं, उनके नाम पर दान–पुण्य करते हैं। तेरा बाप जिंदा है, तू कम से कम दरोगा को यह तो कह दे कि मुझे पीने के लिए पूरा पानी दे दिया करे। औरंगजेब ने उस पत्र का यह जवाब दिया कि तूने जिस स्याही से यह पत्र लिखा है, जब तुझे प्यास लगे तो उसी स्याही को चूस लिया कर।

मैंने जब यह बात सुनी तो मुझे उसी जगह बुखार हो गया। ओह! एक बादशाह ने इतनी ऐश की, आखिरी समय में उसे जेल में डाल दिया गया। मेरे साथ और भी फौजी थे, यह अपना–अपना नजरिया और अपना–अपना ख्याल होता है वे सारे हँस रहे थे। अगले दिन हमारे अफसर ने मेहरबान होकर मुझसे कहा, ''तू बिरला मंदिर देखने जा, वह अच्छी जगह है। वहाँ देवी–देवताओं की बहुत तस्वीरें हैं वह मंदिर काफी मशहूर है।'' जब मैं वहाँ गया तो मैंने देखा कि जो पंडित को एक रूपया देता, पंडित उसके गले में हार डालता और उसे तिलक लगा देता। जो ऐसे ही मत्था टेकता पंडित न उसके गले में हार डालता और न ही उसे तिलक लगाता।

वहाँ दस–बारह अंग्रेज भी थे। एक मेम ने पंडित को एक रूपया दिया तो पंडित ने उसके गले में हार डाल दिया। वह मेम भागकर अपने पति के पास गई कि आ मैं तेरे गले में हार पहनवाऊँ। मेम के पति ने ऐसे ही सिर नीचे कर लिया, पंडित ने उसके गले में हार नहीं डाला। तब मेम ने कहा कि तू अपनी जेब में से एक रूपया निकाल फिर उसने पंडित को एक रूपया दिया तो पंडित ने उसके गले में हार डाला, वे दोनों खुश हो गए। मैंने सब कुछ देखा कि किस तरह पैसा यह सब करवा रहा है।

जब मैं थोड़ा सा आगे गया तो मैंने वहाँ कबीर साहब की पत्थर की मूर्ति देखी। तब मैंने सोचा कि आगे जाने की क्या जरूरत है? जिस महात्मा ने सारी जिंदगी मूर्ति पूजा के खिलाफ इतना संघर्ष किया, बहुत कष्ट सहे। देखो, ये लोग किस अक्ल के मालिक हैं, ये उसी महात्मा की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसे पूजने में लगे हुए हैं। गुरु नानकदेव जी के कहने का यही भाव है कि हम जीव कितने भूले हुए हैं। प्रभु चाहे हमें कितनी भी उम्र दे दे, हम प्रभु की तरफ आने के लिए तैयार नहीं होते।

मिठा कउड़ा दोवै रोग।। नानक अंति विगुते भोग।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''आप सारी जिंदगी मीठा खाते रहें, खुशियाँ मनाते रहें लेकिन जब बीमारी आ जाती है तो सारे सुख एक दम से भूल जाते हैं, सब सुख जहर के बराबर दिखाई देते हैं। जब मुँह कड़वा हो जाता है उस समय सैंकड़ो साल जो भी मीठा खाया होता है वह भी भूल जाता है। चाहे हमने कितनी ही ऐशो-इशरतें की हों लेकिन शरीर में बैठकर दुखों का सामना भी करना पड़ता है।''

प्यारेयो, आपको ऐसा कोई आदमी नहीं मिलेगा जिसने सारी जिंदगी सुख ही सुख देखे हों कभी दुख न देखे हों। हम जिंदगी में कभी सुख देखते हैं तो कभी दुख देखते हैं। बुरे कर्मों की सजा बीमारी है, बेरोजगारी है। अच्छे कर्मों का ईनाम अच्छी सेहत है, अच्छे घर में पैदा होना और अच्छी बुद्धि का होना है। हम इस देह में बैठकर अच्छे और बुरे कर्म करते हैं अगर हमारे अच्छे ही अच्छे कर्म होते तो हम स्वर्गों में बैठे होते अगर बुरे ही बुरे कर्म होते तो हम नर्कों में बैठे होते। कुछ पुण्य और कुछ पाप मिले, हमें इंसान का जामा मिल गया है, यह सुखों-दुखों का घर है।

झखि झखि झखणा झगड़ा झाख।।
झखि झखि जाहि झखहि तिन पासि।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सुख और दुख दोनों ही रोग हैं। प्रभु का नाम छोड़कर हम जो कुछ भी करते हैं वह फिजूल गप्पे मारना है।''

कापड़ु काठु रंगइिआ राँगि।। घर गच कीते बागे बाग।। सद सहज करि मन खेलाइिआ।। तै सह पासहु कहणु कहाइिआ।।

अब गुरु नानकदेव जी गृहस्थी और साधु दोनों को उपदेश करते हैं, ''जब हम गृहस्थ में हैं तो हमारे अंदर अच्छे-अच्छे मकान बनाने की लालसा लगी रहती है। हम उसमें फर्नीचर लगाते हैं, अच्छे-अच्छे रंग लगाते हैं। अगर साधु हैं तो भी अच्छे से अच्छा फर्नीचर लगाते हैं, चलने के लिए संगमरमर की धरती बनाते हैं और ऊपर सोने का कलश चढ़ाकर कहते हैं कि यह हमारा स्वर्गाश्रम है। जिस प्रभु ने सब कुछ दिया है, उसे याद नहीं करते, उसके शुक्रगुजार नहीं होते।

मिठा करि कै कउड़ा खाइिआ।। तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइिआ।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अच्छे-अच्छे बागों की सैर की, सैर के लिए अच्छी जगह बनाई उसमें खुश होकर भोग भोगे। आखिर मीठे में से ही कड़वे दुख उपजते हैं। जब कड़वे दुख-बिमारियां लगती हैं, मौत का फरिश्ता आकर गला दबाता है फिर वे सारे सुख जहर रूप हो जाते हैं। आत्मा को मीठा और कड़वा दोनों ही रोग हैं, ऐशो-इशरत भी रोग है।

जे फिरि मिठा पेड़ै पाइि।। तउ कउड़तणु चूकसि माइि।।

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''**अगर यह सुख-दुख भोगते हुए सब कुछ प्रभु का समझते हुए, प्रभु की भक्ति करे, नाम की कमाई करे तो यह जल्दी दुखों से छुटकारा पा जाए,** यही अमृत रूप बन जाए।''

नानक गुरमुखि पावै सोइि।। जिस नो प्रापति लिखिआ होइि।।

गुरु नानक जी कहते हैं,''नाम का पदार्थ गुरुमुख ही प्राप्त करते हैं या वे आत्माएं प्राप्त करती हैं जिनका धुर-दरगाह में प्रभु ने लेख लिख दिया है।

नानक सतगुरु तिन्हां मिलाया, जिन्हां धुरों पया संजोग

जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरू धोवाइआ।।
कूड़ कपटु कमावदे कूड़ परगटी आइआ।।

गुरु नानकदेव जी दुनिया के जीवों की तरफ निगाह मारते हुए कहते हैं कि आमतौर पर लोग कर्म काटने के लिए दरिया, सरोवर में स्नान करते हैं कि हमारे पाप कट जाएंगे। वे यह नहीं सोचते कि जो मेंढक-मछलियाँ उस दरिया, सरोवर में रहते हैं वे मुक्त नहीं हुए जो चौबिस घंटे उसमें खाते-पीते हैं। अगर हम साल में एक बार या महीने में एक बार वहाँ डुबकी लगाते हैं तो हमारे पाप किस तरह कट सकते हैं? कबीर साहब कहते हैंः

जल का मंजन जे गत पावे, नित नित मेंढक न्हावे
जैसे मेंढक तैसे ओ नर, फिर फिर योनि आवे

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सच्चा सरोवर आपका शरीर है, इसके अंदर जाकर नाम का स्नान करें।''

यह शरीर सरवर है सन्तों स्नान करे लिव लाए
नाम स्नान जो करे सो जन मैल गवाए

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैल मन के अंदर है। मन ने आत्मा को और इन्द्रियों ने मन को मलीन किया हुआ है। पानी से किस तरह मैल जा सकती है? पानी चाहे अपना है या पराया है या किसी सरोवर का है, पानी बदन की मैल ही उतार सकता है।''

अंदरि होइि सु निकलै नह छपै छपाइिआ।।
कूड़ै लालचि लगिआ फिरि जूनी पाइिआ।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''तीर्थ करने से अहंकार आ जाता है। हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के कहने पर पाप करते हैं फिर कहते हैं कि तीर्थ करने से हमारे सारे पाप उतर गए हैं लेकिन बस्ती में आकर फिर उसी तरह पाप-ऐब करते हैं। आपके अंदर कूड़ है, चाहे बाहर आप पाखंड करके लोगों को जितना मर्जी दिखा दें लेकिन जब धर्मराज के पास जाएंगे तो आपका राज़ खुल जाएगा। धर्मराज आपका रिजल्ट बता देता है कि तूने ये कुछ कमाया है।''

नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ।।

गुरु नानकदेव जी प्यार से कहते हैं, ''जब इसने अपना अमालनामा गंदा किया हुआ है तो वह साहब परमात्मा इसे किस तरह ईनाम दे? बाहर तो लोगों को महात्मा बनकर दिखाया लेकिन उस प्रभु के आगे महात्मा नहीं बना। बाहर तो मैल धोकर कह दिया कि मैं सुच्चा-पवित्र हो गया हूँ लेकिन आत्मा की मैल नहीं उतारी। प्रभु सब कुछ देखता है, प्रभु हर इंसान के अंदर है। प्रभु ऐसे जीवों को योनियों में डाल देता है।''

लोमस ऋषि ने अपने पिता से पूछा था कि मुक्ति किस तरह मिलती है? उसके पिता ने कहा,''तुम गंगा में डुबकी लगाओ, तुम्हें परमात्मा मिल जाएगा।'' लोमस ऋषि ने कहा, ''मैं हजार वर्ष गंगा में नहाता रहा हूँ। जहाँ आशा थी वहाँ मेरा जन्म होता रहा है। मैं कई बार बड़ा मगरमच्छ बना तो छोटे मगरमच्छों को खाया, कई बार बड़े मगरमच्छों ने मुझे खाया।''

गुरु नानकदेव जी का यह मतलब नहीं कि आप घर, जायदाद या दुनिया छोड़ दें। इन्हें आप परमात्मा की देन समझें, इनमें बैठकर परमात्मा की भक्ति करें, परमात्मा से प्यार करें।

हमारा भी फर्ज बनता है कि परमात्मा ने दया-मेहर करके हमें जो जीवन दिया है हम इसमें बैठकर परमात्मा की भक्ति करें, परमात्मा से प्यार करें, 'शब्द-नाम' की कमाई करें। ✻✻✻

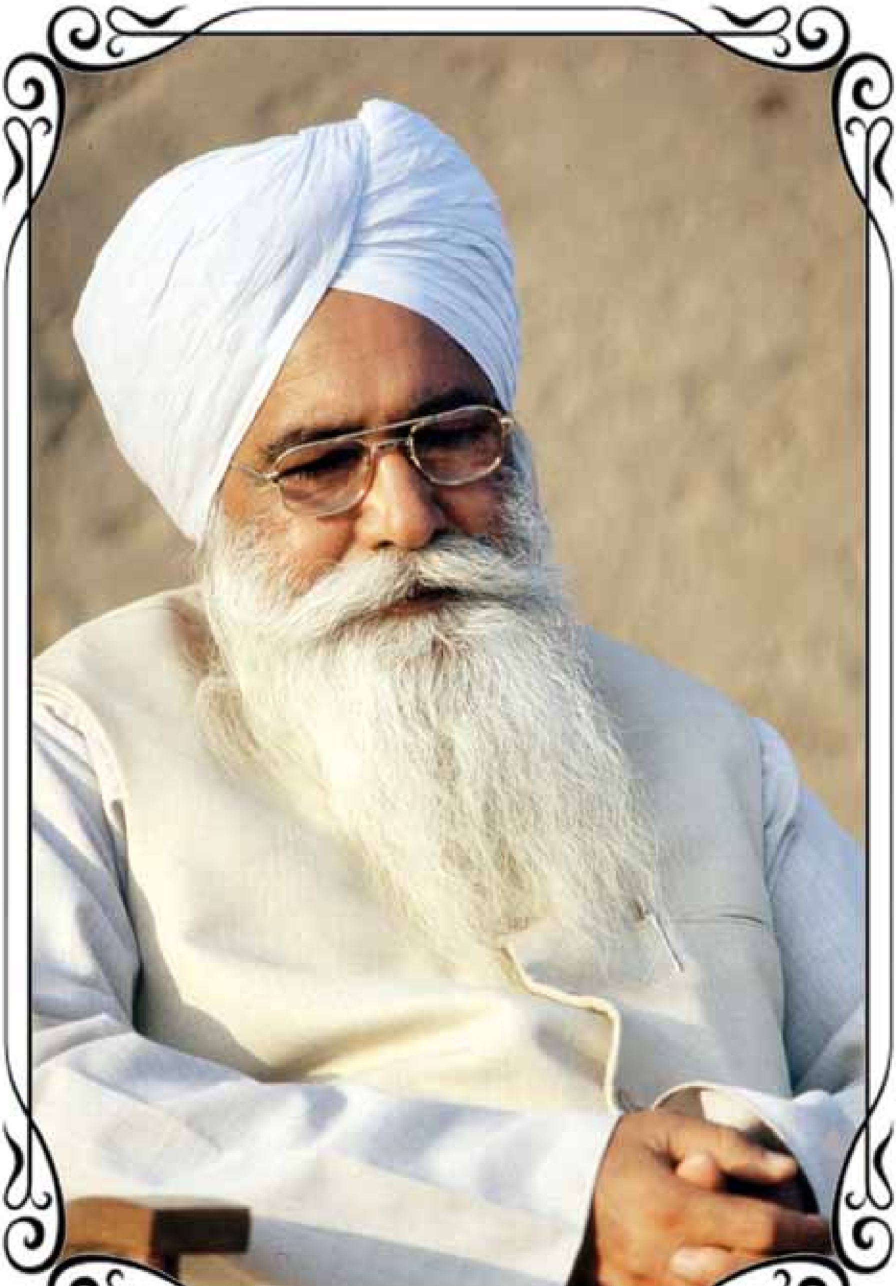

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सेहत

06 मार्च 1982

***एक प्रेमी**: अक्सर जब हम अभ्यास करते हैं तो हमें ऐसा डरावना तजुर्बा होता है, जिसके अंदर ऐसा लगता है कि कोई ताकत हमारे शरीर को दबाने की कोशिश करती है, क्या यह भयानक और डरावना तजुर्बा काल की तरफ से होता है या दूसरी ताकतें ऐसा करती है कि हम सिमरन भी नहीं कर सकते?*

बाबा जी: कई बार हमारे अपने ख्याल ही डरावनी शक्ल बनकर आगे आ जाते हैं लेकिन काल की तरफ से कोई ताकत नहीं होती। हमारी दिन भर की जो सोच होती है, जब हम अभ्यास पर बैठते हैं तो हमारी सुरत थोड़ी बहुत ऊपर खिंचती है लेकिन फिर से वे ख्याल बीच में आ जाते हैं।

***एक प्रेमी**: प्रसाद की क्या अहमियत है? क्या इससे हमारी चेतन शक्ति पर कोई असर पड़ता है अगर हम प्रसाद को अपने परिवार के साथ बाँटकर खाएं तो उसका हमारे ऊपर क्या असर होगा?*

बाबा जी: प्रसाद के बारे में सन्तबानी मैगजीन में काफी कुछ छप चुका है, आप सन्तबानी मैगजीन पढ़ें।

***एक प्रेमी**: प्यारे महाराज जी, आपने हमेशा यही कहा है कि अपनी **सेहत** की देखभाल करें, यह ठीक है? अगर हमारे कर्मों में न लिखा हो तो भी हम बीमार हो सकते हैं?*

बाबा जी: बीमारी हमेशा दो प्रकार की होती है। एक अपनी **सेहत** की खुद देखभाल न करने के कारण और दूसरी कर्मों का लेखा–जोखा चुकाने

के लिए होती है। बहुत सी बीमारियाँ हमारी लापरवाही के कारण होती हैं। मेरा आपको बार-बार चेतावनी देने का भाव यह है कि मैं आर्मी के दौरान बर्फीले इलाके में रहा हूँ। मुझे पता है कि जो लोग बर्फीले इलाके में रहते हैं, वे जब मैदानी इलाके में आते हैं तो उन्हें सर्दी कम लगती है क्योंकि शरीर में सर्दी बढ़ी होती है इसलिए उन्हें बहुत जल्दी निमोनिया या जुकाम के साथ थोड़ा बहुत बुखार हो जाना स्वाभाविक है।

मेरा अपना तजुर्बा है जो मैं आपको ग्रुपों में चेतावनी देता रहता हूँ कि भई, अपनी **सेहत** की देखभाल करें अगर एक आदमी बीमार हो या उसे जुकाम हो तो इसका असर सारे ग्रुप पर पड़ता है। आपको चेतावनी देना मेरा फर्ज बनता है। आस-पास बहुत ओले गिरे हैं, हिन्दुस्तान के काफी इलाके में बर्फ पड़ी है, हवा बर्फ में से आ रही है, यह खुष्क सर्द हवा है, यह हवा शरीर पर अच्छा असर नहीं करती।

आपको पता है अगर आपकी **सेहत** ठीक है तभी आप अभ्यास कर सकेंगे अगर कोई बीमार हो जाता है तो मुझे बहुत फिक्र हो जाता है। तकरीबन सारे ग्रुप अच्छा डिसिप्लिन रखते हैं, खाना सोच-समझकर खाते हैं। जिस तरह अभ्यास का कार्यक्रम होता है वे वैसा ही करते हैं और ठीक रहते हैं लेकिन कोलम्बियन ग्रुप के प्रेमी अपनी **सेहत** की देखभाल नहीं करते जितना कि और मुल्क के लोग करते हैं। कोलम्बियन प्रेमी यहाँ जरूर बीमार होते हैं जिससे मैं भी परेशान हो जाता हूँ। यहाँ आते ही मैं उन्हें चेतावनी देता हूँ कि देखो भई! छह ग्रुप आते हैं, सारे ही तंदरूस्त रहते हैं फिर आपका ग्रुप क्यों बीमार होता है? क्योंकि आप लोग अपनी सेहत की खुद देखभाल नहीं करते।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोग अपनी **सेहत** की देखभाल करेंगे। कार्यक्रम के अनुसार भजन-अभ्यास करेंगे। यहाँ जो कार्यक्रम बनाया गया है यह आपके फायदे के लिए बहुत सोच-समझकर बनाया गया है ताकि

आप रात को जल्दी सोकर सुबह तीन बजे उठ सकें। सेवादार टाइम पर आपको चाय देते हैं, आपके लिए गर्म पानी का प्रबंध करते हैं। सेवादार आपके लिए हर तरह की कुर्बानी करते हैं। आपका भी फर्ज बनता है कि आप उनकी सेवा से फायदा उठाते हुए भजन–सिमरन करें। कार्यक्रम के अनुसार चलें, शाम को जल्दी खाना खाकर सोने से सुबह तीन बजे उठने में आपको कोई दिक्कत नहीं होगी।

मेरा यह मकसद है कि आप इस कार्यक्रम के मुताबिक ज्यादा से ज्यादा अभ्यास करें और इस पवित्र यात्रा से फायदा उठाएं। जो प्रेमी इस कार्यक्रम के मुताबिक अभ्यास करते हैं वे मुझे अपने बहुत अच्छे तजुर्बे बताकर जाते हैं। वे कहते हैं कि जब हम यहाँ आए थे तो हमारी क्या हालत थी। हमने किस तरह अभ्यास में तरक्की की, पहले ज्योत दिखाई नहीं देती थी, शब्द नहीं सुनता था। अब ज्योत भी दिखाई देती है और शब्द भी सुनाई देता है।

मैं पश्चिम के प्रेमियों को यह सलाह दिया करता हूँ कि आप लोग इधर–उधर बाजारों में न घूमें। आपके मुल्क में इससे भी अच्छे बाजार हैं। आपके लिए यह पवित्र यात्रा है, इस यात्रा के लिए आप अपने देश से तैयारी करके आएं। आपको यहाँ दस दिन ठहरने के लिए मिलते हैं इसमें आप बिल्कुल एकांत लें। मैंने बहुत साल अपनी जिंदगी एकांत में बिताई है, भक्ति करके भगवान को पाया है।

मैंने जो तजुर्बा किया है उससे मुझे जो कुछ मिला है, मैं आपको वही बता रहा हूँ। अगर आप दिन में आठ घंटे बाजार में गए, चार घंटे भी अभ्यास करेंगे तो बाजार में जाकर मन ज्यादा फैलेगा। आँखे बाहर की तरफ खींचती है, कान बाहर की तरफ खींचते हैं, जुबान लोगों से बातें करके आपको बाहर की तरफ खींचती है तो दुनिया का पालड़ा भारी रहेगा। अगर आप रोज चार घंटे भी अभ्यास करेंगे तो आप चार घंटे का

लेखा-जोखा लगाकर देख सकते हैं कि आपका मन कितने मिनट हाजिर रहकर अभ्यास कर सका और कितने घंटे बाहर की तरफ दौड़ा।

मैं खुद अपनी बीती बताया करता हूँ कि मैं आठ घंटे जाप किया करता था लेकिन मेरा जाति तजुर्बा यह है कि आठ घंटे में सिर्फ पाँच-सात मिनट ही पता होता था कि मैंने ये जाप किया है। जब हटना होता तो दो चार मिनट पहले ख्याल आता कि मैं इस चीज का जाप कर रहा हूँ।

मैं जब बाबा बिशनदास जी के चरणों में गया तब पता लगा कि किस तरह मन के साथ संघर्ष करना है क्योंकि मन काल का एजेंट है यह कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देता। जब हुजूर ने मुझे इस जगह अभ्यास करने का हुक्म दिया था उस वक्त यही कहा था, ''जितना ज्यादा एकांत लिया जाए उतना ही थोड़ा है।'' इसलिए मैंने एकांत लेने की पूरी कोशिश की। मैं सिर्फ जरूरी क्रिया के लिए ही बाहर निकलता था, उसके बाद मैं हमेशा ही अंदर बैठा रहता था।

हुजूर के वक्त पश्चिम के बहुत से प्रेमी आते थे। मुझे पश्चिम के कई पुराने सतसंगी बताया करते हैं कि एक घंटा सवाल-जवाब कर लेना, एक घंटा अभ्यास कर लेना उसके बाद क्नाट प्लेस में घूम लेना, सिनेमा देखने चले जाना। आप सोचकर देखें, उन्हें क्या प्राप्त हुआ? वह कुलमालिक कृपाल के चोले में आया, अच्छा होता कि हम उनके दर्शनों में मग्न हो जाते और उनके दर्शनों से फायदा उठाते। आज हम उस मनमोहने स्वरूप को देख नहीं सकते। उन लोगों ने ऐसा मौका हाथ से निकाल दिया। गुरु के दर्शन करने से जो पाप कटता है वह किसी कमाई वाले को ही पता है कि गुरु के दर्शनों को छोड़कर जो आदमी दूसरी तरफ झाँकता भी है तो उसका कितना नुकसान होता है।

महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी से नाम लेने से पहले चाहे जितने सवाल किए लेकिन जब नाम मिल गया उसके बाद वे

कमाई में लग गए। इसी तरह महाराज कृपाल की हिस्ट्री भी हमें बताती है कि नाम लेने के बाद उन्होंने अपने गुरुदेव से कोई खास सवाल नहीं किए।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैं तड़पता था, प्यासा था। जब हुजूर कृपाल मिले तो उन्होंने मेरी तड़प बुझाई, प्यास बुझाई। मैंने उनसे कोई सवाल नहीं किया। प्यासा तो सिर्फ पानी पिलाने के लिए ही कहता है। जिसे प्यास नहीं लगी वह सौ सवाल करेगा कि यह पानी छाना हुआ है, यह पानी ठंडा है, यह किसका पानी है, यह पानी देह पर बुरा असर तो नहीं करेगा? वह सिर्फ बातें ही करेगा।

प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को आग के पास कर दें, आग के पास आते ही पटाखा बज जाता है लेकिन हम गीले बारूद हैं। हमें जैसे–जैसे सतसंग की तपिश मिलेगी हम थोड़ी बहुत नाम की कमाई करेंगे तो हम धीरे–धीरे उस खुष्क बारुद की तरह हो जाएंगे। हमारी आत्मा मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाकर 'शब्द' के साथ जुड़ जाएगी।

भगवान आपसे दूर नहीं, गुरु आपसे दूर नहीं, गुरु शब्द रूप होकर आपके अंदर बैठ गया है। भगवान इंसान का जामा धारण करके आपके सामने आ गया है। भगवान पवित्र है, आपका फर्ज है कि आप भी पवित्र बनें। गुरु ने आपको डेमोस्ट्रेशन देने के लिए मेहनत की, आप भी मेहनत करें ताकि अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाए और आप खुद देख सकें कि भगवान ने अंदर आपके लिए किस तरह की रचना रची है और गुरु ने हमारे लिए अंदर क्या किया हुआ है, अंदर किस तरह के नजारे हैं।

मैंने सारी जिंदगी सिनेमा से परहेज रखा हाँलाकि आर्मी में मुफ्त सिनेमा दिखाते थे। मैं किसी और की ड्यूटी पर बैठ जाता लेकिन सिनेमा नहीं देखता था। मैं कहा करता था कि मुफ्त की जहर भी बुरी होती है। मैंने जिंदगी में सन्तबानी आश्रम में अपनी ही फिल्म देखी।

हुजूर कहा करते थे, ''परमात्मा इंसान की तलाश में है आप इंसान बनें, पवित्र बनें, मेहनत करें, मेहनत के कभी भी चोर न बनें।'' याद रखें! परमात्मा किसी की भी मेहनत नहीं रखता, सोकर रात न बिता दें उसमें से कुछ हिस्सा अभ्यास में भी लगाएं। विषय-विकार भोग-भोग कर देख लिए हैं आखिर इनसे भी तौबा करके देख लें क्योंकि काम और नाम की दुश्मनी है। जहाँ काम है वहाँ नाम प्रकट नहीं होता। जहाँ नाम है वहाँ काम पर नहीं मार सकता। कबीर साहब कहते हैं:

कामी कबहू न गुरु भजे मिटे न संसा मूल
इन्द्रन केरे वस पड़ा भोगे नर्कन सूल

नाम और काम का इस तरह फर्क है जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं, जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं। कामी का तो संशय ही दूर नहीं होता कि मैं बुराई कर रहा हूँ, वह किस तरह गुरु की भक्ति करेगा?

***एक प्रेमी**: अगर यह सवाल गलत है तो कृपया आप मुझे क्षमा करें। मैं आज सुबह दो प्रेमियों से बात कर रहा था, हमने सोचा अमेरिका में इस तरह का आँखों का इलाज है कि उस इलाज के बाद आपको ऐनक नहीं लगानी पड़ेगी। अगर आप इजाजत दें तो हम उसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। शमस आश्रम में आपका मकान खाली है, पोटर वैली में मेरा मकान खाली है, आप वहाँ रह सकते हैं, हम आपका इंतजाम कर सकते हैं।*

बाबा जी: आपकी सलाह के लिए मैं आपका धन्यवादी हूँ। मेरी जिंदगी इस किस्म की है कि मैं यहाँ (16 पी.एस.आश्रम) की हवा और खानपान के मुताबिक ही जिंदगी बसर कर रहा हूँ। मैं दिल्ली जाकर भी बीमार हो जाता हूँ, वहाँ भी थोड़े दिन ही ठहर सकता हूँ। मैंने पिछले साल भी डॉक्टरों से राय ली थी। पिछले साल कई प्रेमियों का विचार था कि कोलम्बिया में अच्छा इलाज हो रहा है। रायसिला का विचार था कि मैं सारा इंतजाम कर दूँगी लेकिन मुझे वहाँ का इलाज फिट नहीं बैठेगा इसलिए दिल्ली में ही ठीक है।

एक प्रेमी: *हम आपको दुखी नहीं देख सकते। हम हमेशा महाराज कृपाल से यही प्रार्थना करते हैं कि आप पूर्ण स्वस्थ हो जाएं। मैंने जब भी लोगों के लिए प्रार्थना की है तो कभी ऐसा नहीं हुआ कि मेरी प्रार्थनाओं का जवाब न मिला हो, देर जरूर लगती है लेकिन हमेशा हर प्रार्थना का जवाब मिलता है। मेरी यही प्रार्थना है कि महाराज कृपाल आपकी* ***सेहत*** *ठीक रखें। मुझे उम्मीद है कि इस प्रार्थना का जवाब भी मिलेगा।*

बाबा जी: मैं आपकी प्रार्थना का धन्यवादी हूँ, आप मेरी माता हैं। कृपाल ने बहुत दया करके आपको मेरे लिए तैयार किया है। मैंने आपको कई बार प्यार से बताया है कि मेरी जिंदगी दुनिया से अलग तरह की व्यतीत हुई है। मैंने अपनी जिदंगी का एक हिस्सा जमीन के नीचे बिताया है, मैंने सत्तरह साल एक बार और पाँच साल एक बार जमीन के अंदर बैठकर लगातार अभ्यास किया है। मैं शुरु से ही स्वादु नहीं था, मैंने खाना बिना गर्म मसाले के बिल्कुल ही सादा खाया है। मैं हुजूर कृपाल के चोला छोड़ने से थोड़े समय पहले ही बाहर आया।

जब मैं पहली बार सन् 1976 में पहले टूर पर बाहर जाने लगा तो मैं दिल्ली जाते ही बीमार हो गया और टूर पर नहीं जा सका। जब सन् 1977 में टूर पर गया तो उस समय मैं दिल्ली में नहीं ठहरा। अब जब मैं सन् 1980 में टूर पर गया तो इसी तरह किया था। मैं दिल्ली में दो-तीन दिन से ज्यादा नहीं ठहरता।

अगर मुझे यह पता होता कि हुजूर मुझसे यह काम लेंगे, इतनी आत्माओं के कर्मों का बोझ उठाना पड़ेगा तो मैं कभी भी अंदर जाकर अभ्यास न करता। मुझे यह भरोसा था कि मेरा गुरु मुझे जरूर सच्चखंड लेकर जाएगा फिर मुझे दुनिया में जन्म नहीं लेना पड़ेगा। उस समय दिल के अंदर चाव था कि पर्दा खुले, अंदर गुरु को प्रकट करें लेकिन जब अंदर गुरु प्रकट हो जाता है तो वह कहता है, ''तुझे यह काम करना पड़ेगा।''

मेरा सारा जीवन त्याग में बीता है। मैं अपने परिवार से शुरुआत में ही अलग हो गया था क्योंकि उनसे मेरे ख्याल नहीं मिलते थे। मेरे माता-पिता मुझे दुनियादारी में फँसाना चाहते थे लेकिन मैं दुनियादारी को पसंद नहीं करता था। मेरे अंदर परमात्मा को पाने की तड़प थी। उस त्याग का आज भी मेरे ऊपर असर है इसलिए मेरे आश्रम में कोई भी किसी के लिए प्रोपेगंडा नहीं करेगा, यहाँ सिर्फ भजन-अभ्यास की ही बात होगी।

मेरे दिल में यह नहीं कि मेरे ज्यादा शिष्य हों, मिशन बड़ा हो। सन्तों ने कौनसी आर्मी खड़ी करनी होती है, मजबूत शिष्य तो एक ही काफी होता है। अब भी कभी-कभी दिल पर ऐसा असर हो जाता है कि सब कुछ छोड़कर जमीन के अंदर बैठ जाऊँ, मैंने किसी से क्या लेना है? लेकिन यह बात हुजूर को मंजूर नहीं क्योंकि वे चाहते हैं कि मेरी आत्माओं को पानी मिलता रहे, दुनिया को कुछ तो सच्चाई मिलती रहे।

मैंने जब शुरु में हुजूर के पास यह ख्याल पेश किया कि मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं तो उन्होंने कहा कि मेरी भी दिलचस्पी नहीं थी लेकिन तुझे सच्चाई का होका देना पड़ेगा। मैंने कहा, ''सच्चे पातशाह, दुनिया में बहुत मुश्किल है, बहुत प्रोपेगंडा चल रहा है।'' हुजूर ने कहा, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे।'' ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

अनुशासन

हम उन महान हस्तियों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हमारे ऊपर अपार दया करके हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। हमारे अंदर यह हिम्मत नहीं थी कि हम अपने घर-बार की सख्त जंजीरों को ढीला करके परमात्मा सावन-कृपाल की याद में बैठ सकते, यह भी उन महान आत्माओं की दया है।

कल सतसंग में बताया गया था कि हमारा प्यार सोया हुआ है, गुरु से मिले बिना प्यार नहीं जागता। गुरु हमेशा प्यार देते हैं लेकिन सवाल हमारे समझने का है कि हम उनकी हमदर्दी को समझ सकें या उनकी हमदर्दी से कोई फायदा उठा सकें।

कबीर साहब कहते हैं, ''पेड़ अपने फायदे के लिए पैदा नहीं होता, संसार को फल देने के लिए पैदा होता है। चाहे कोई पेड़ को पत्थर मारे फिर भी पेड़ उसे खाने के लिए मीठा फल देता है। नदी संसार के फायदे के लिए बह रही है। पशु-पक्षी, इंसान नदी का पानी पीते हैं, हम नदी से अन्न पैदा करते हैं। इसी तरह बारिश दुनिया के फायदे के लिए बरसती है।''

सन्त भी संसार में दुनिया के फायदे के लिए आते हैं। सन्त संसार में अपनी कोई गर्ज लेकर नहीं आते। परमात्मा ने उनकी ड्यूटी लगाई होती है कि भूली हुई आत्माओं को समझाकर ले आएं। सन्तों का दया करने का अपना-अपना तरीका होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों के पास अनेकों प्रकार की शिक्षा होती है। जिस तरह कोई भक्ति में लगता है तो वे उसी तरह उसे प्यार से भक्ति में लगा लेते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी सतसंग में एक खास वाक्या अक्सर कहा करते थे कि जो लोग यह कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं, वे लोग अंधे हैं। जब आँख खुल जाती है तब पता लगता है कि कोई हमें सतसंग में लेकर जाता है, खींच रहा है। हम यह भी कह देते हैं कि हम घंटा, दो घंटा भजन में बैठ रहे हैं लेकिन जब आँख खुलती है तो पता लगता है कि हम भजन में बैठते हैं या कोई हमें बिठाता है।

मैंने सारे संसार में यह बात दावे से कही है कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं, यह एक सच्चाई है। आज तक जिसने भी कमाई की, गुरुओं की हिदायत के मुताबिक अपना जीवन ढ़ाला, अंदर जाकर सच्चाई को खुद आँखों से देखा, वे नहीं कह सके कि यह परियों की कहानी है। उन्होंने दूसरे लोगों को सच्चाई ब्यान की कि जो कुछ अंदर है उसकी महिमा अपरम्पार है जिसे ब्यान नहीं किया जा सकता। जो अंदर चला जाता है उसकी जुबान गूंगी हो जाती है, उसकी आँखों में सब्र आ जाता है और आत्मा प्यार से गद्‌गद् हो जाती है। इसी तरह उन्होंने हमारे ऊपर दया करके हमें अपना प्यार बख्शा।

महाराज सावन सिंह जी बहुत धड़ल्ले से कहा करते थे, ''अगर सतसंगी मजबूत है, सतसंग में जाता है, गुरु मजबूत है तो गुरु ने यह इरादा बनाया है कि मैं इसे इस जन्म के बाद दूसरा जन्म न दूं। जैसे हवाई जहाज सवारियों को लेकर उड़ जाता है वैसे मैं इन्हें लेकर चला जाऊं।''

काल एक ऐसी ताकत है जो नहीं चाहती कि जीव किसी तरह भी मेरे फंदे को तोड़ जाए। सन्तों की रूह को काल कोई सजा नहीं दे सकता, जन्म-मरण के कष्ट में नहीं डाल सकता क्योंकि उसके सिर पर पूरा गुरु है। काल, जीव को तन-मन के पिंजरे में उलझाकर कैद कर सकता है और समस्याएं खड़ी कर देता है फिर हम उसके कहे अनुसार चलने लगते हैं। जब किसी तरह काल का दाँव नहीं चलता तो वह सतसंगियों के मन में

बैठ जाता है। मन एक–दूसरे सतसंगी को अलग कर देता है अगर सतसंग में आपका प्यार–मौहब्बत नहीं तो आपके अंदर श्रद्धा किस तरह आएगी।

गुरु की ड्यूटी है कि दूर–नजदीक जितनी भी आत्माएं हैं उन्हें नाम के साथ जोड़ना, नाम की कमाई का भेद बताना, अपना प्यार देकर उन्हें प्रभु के प्यार में जगा देना। सतसंगी की भी जिम्मेदारी है अगर वह समझे? कई बच्चे इस जिम्मेदारी को समझते हैं कि मेरा पिता जो व्यापार करता है, मैं भी उसकी मदद करूं और जिम्मेदारी से उस व्यापार को चलाऊँ।

इसी तरह अगर सन्तों के सतसंगी महसूस करते हैं कि गुरुदेव हमारी जिंदगी बनाने में लगे हुए हैं तो सतसंगी मजबूत हो जाएंगे, आपस में प्यार बनाएंगे। सतसंग को कामयाब करने के लिए **अनुशासन** बहुत जरूरी होता है। बाबा जयमल सिंह जी, महाराज सावन सिंह जी व कृपाल सिंह जी आर्मी में गए और इस गरीब आत्मा को भी आर्मी में जाने का मौका मिला।

आर्मी में हुक्म मानने की आदत डाली जाती है। आर्मी में इस किस्म के हुक्म दिए जाते हैं कि खाना तैयार करें। लकड़ी और राशन कहाँ से मिलेगा इसकी रिपोर्ट बाद में करें। आर्मी में रहते हुए आदत बनी कि हुक्म मानना कितना जरूरी है। हम दुनियावी लोगों को खुश करने के लिए उनका हुक्म बजाते हैं, रातों को जागते हैं, मेहनत करते हैं। कोई भाग्यशाली ही गुरु का हुक्म मानता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भगवान इंसान की तलाश में है कोई इंसान बने।'' आप इंसान बनकर देखें, भगवान इंसान के पीछे–पीछे फिरता है। महाराज सावन सिंह जी को बाबा जयमल सिंह जी ने खोजा। महाराज कृपाल को बाबा सावन सिंह जी ने खोजा। मैं खुद जमीन में नीचे बैठा था, मुझे कौन जानता था? उस शहंशाह कुलमालिक कृपाल ने मेरे घर आकर मुझे खोजा। महाराज कृपाल ने कहा, ''प्यारेया, यह काम करना है, मैं ही तेरे पास आऊँगा।''

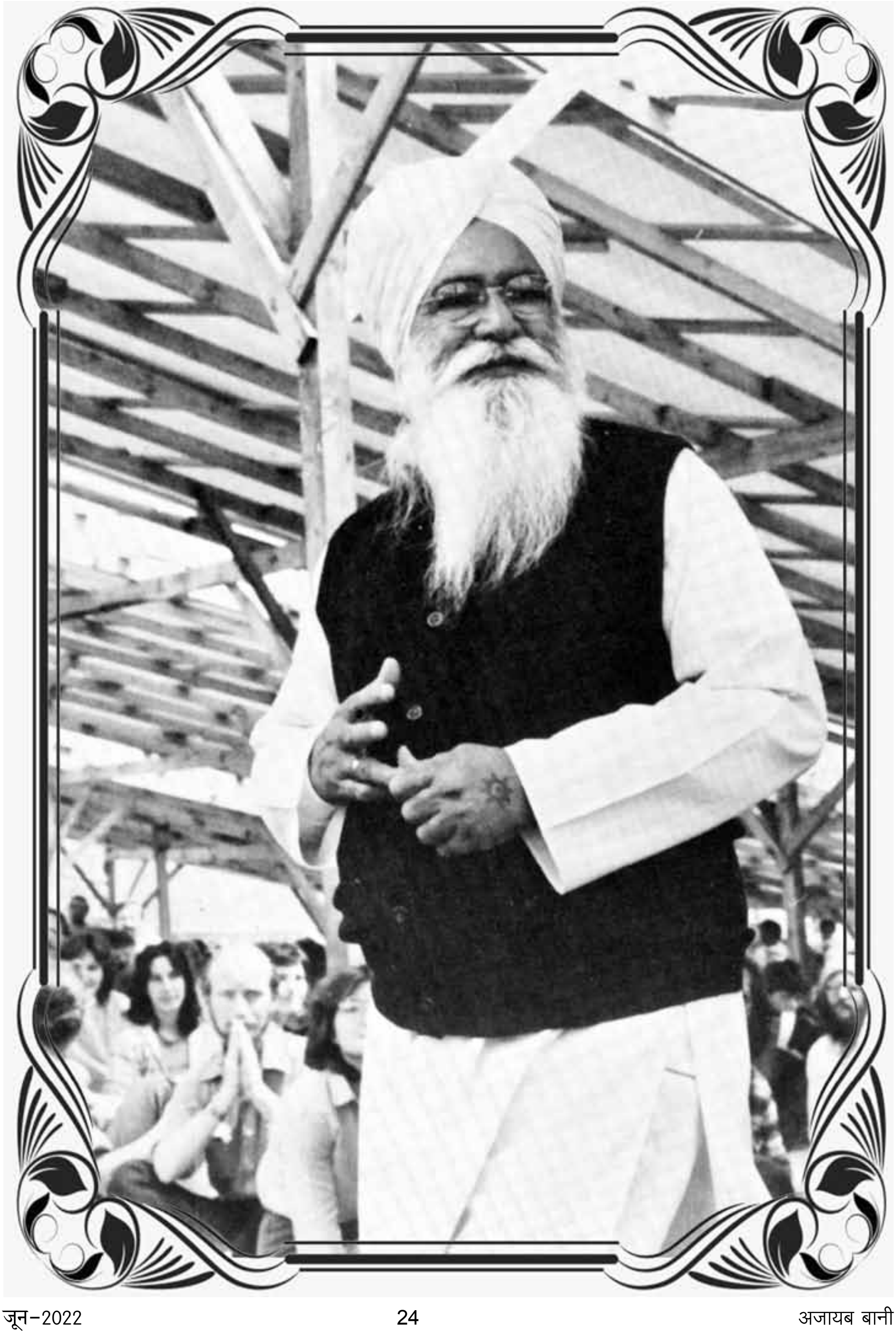

मैं संसार में यही कहता हूँ कि मेरा अपना कोई मिशन नहीं, मैं कोई मिशन लेकर नहीं आया। यह मिशन सावन–कृपाल का है। मैं सारी जिदंगी प्यार का पुजारी रहा, मेरा गुरुदेव प्यार का समुंद्र था, मुझे विरासत में प्यार मिला है और मैं वही प्यार आपके साथ बाँटने के लिए आया हूँ।

सन्त हमारे अंदर प्यार पैदा करते हैं। काल के पास बहुत दाँव हैं, हमारा मन अंदर से सतसंगियों को अलग–अलग कर देता है। जब हम एक–दूसरे की नुक्ता–चीनी करते हैं तो वहाँ भजन कहाँ रहा? स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु डाँटता है सतसंगी रोते हैं।'' हम सतसंगियों का आपस में ज्यादा से ज्यादा प्यार होना चाहिए क्योंकि हम कोई समाज नहीं चला रहे होते, हम समाजों से ऊपर होते हैं। सभी सन्तों का यही उपदेश है कि सब आपस में मिलकर बैठें। गुरु साहब कहते हैं:

होइ इकत्र मिलो मेरे भाई दुबिधा दूर करो लिव लाइ।
हर नामै के होवो जोड़ी गुरमुख बैसो सफा विछाइ।।

हुजूर कृपाल ने दुनिया के हर इंसान को परमात्मा की याद में इकट्ठे होकर बैठने के लिए कहा। मैंने यह सतसंग सन्तबानी आश्रम, अमेरिका में भी दिया था कि काल किस तरह सतसंगियों को परेशान करता है, उनका भजन–सिमरन लूट लेता है। भजन–सिमरन छूट जाता है फिर हम एक–दूसरे की निन्दा–चुगली, नुक्ता–चीनी में लग जाते हैं। सन्त सिखाते हैं कि आपस में प्यार–मौहब्बत करें, इकट्ठे होकर बैठें इसमें आपका फायदा है। आप करके देखें, सन्त हमें जो हुक्म देते हैं उन्होंने खुद उस हुक्म की पालना की होती है, **अनुशासन** बहुत जरुरी है।

पच्चीस–तीस साल से जो लोग मेरे आस–पास रह रहे हैं उनमें से कोई यह नहीं कह सकता कि मैंने कभी खाने की निन्दा की हो या मैं काफी देर तक सोता रहा या सुबह किसी ने मुझे सोता हुआ देखा हो। मैं **अनुशासन** में हूँ। आर्मी में हमें अनुशासन में रहना सिखाया जाता है।

मैं यहाँ खेत में एक तरफ बैठकर अभ्यास किया करता था। दिल में ख्याल आया क्या हम यहाँ मालिक का हुक्म मानते हैं, क्या गुरु का हुक्म एक मामूली अफसर जितना भी नहीं? हम सोचते हैं कि गुरु तो किसी और तरफ बैठा है। ऐसी बात नहीं, गुरु आपके नजदीक आपके अंदर बैठा है। आप सबसे पहले **अनुशासन** की आदत बनाएं। अनुशासन होगा तो मकान की नींव मजबूत होगी।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी रोपड़ के इलाके में गए तो उन्होंने वहां लोगों को **अनुशासन** के बारे में समझाया कि आपके पास जीवन को सुधारने का क्या तरीका है और आप लोग क्या काम करते हैं? उन लोगों ने बताया, ''हम डकैती करते हैं।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''प्यारेयो, तुम इन कर्मों का लेखा कैसे दोगे?'' उन लोगों ने कहा कि हम पढ़े-लिखे नहीं हम किस तरह लेखा दे सकते हैं? गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''जब आपसे पाप हो जाए तो आप एक कंकर एक तरफ रख दें और शाम को गिनें कि आपने कितने पाप किए।''

इस तरह कंकरों के बड़े-बड़े ढ़ेर बन गए। सबने बैठकर सलाह की कि हम इतने पाप किस तरह भोगेंगे? किसी समझदार आदमी ने उन्हें पाप छोड़ने के लिए कहा, उन लोगों ने पाप करने छोड़ दिए। कुछ दिनों बाद गुरु गोबिंद सिंह जी ने फिर वहाँ सतसंग का दीवान लगाया और उन लोगों से पूछा कि मैंने आपको जो शिक्षा दी थी क्या आपने उस शिक्षा का लेखा-जोखा किया? उन लोगों ने कहा, ''हाँ जी, एक दिन लेखा किया था, कंकरो के बड़े-बड़े ढ़ेर लग गए। हम सबने पंचायत में बैठकर यह फैसला किया कि हम पाप न करें फिर हमें लेखा नहीं देना पड़ेगा।''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सिंह जी ने हमें डायरी रखने के लिए कहा। हम पश्चिम में हर व्यक्ति को डायरी देते हैं। उस डायरी में वे रोजाना जो कुछ करते हैं उसे लिखते हैं लेकिन हमारे इलाके की ज्यादातर जनता

अनपढ़ है अगर किसी को डायरी दे भी दें तो वह उस डायरी को ऊँची जगह पर रखकर घी की ज्योत जलाते हैं जैसे किसी देवता के आगे ज्योत जला रहे हों।

पश्चिम में हर व्यक्ति को डायरी दी जाती है अगर वह उस डायरी को न भी भरे तो उससे कहते हैं कि तू हमें खाली डायरी भेज। तब मन अंदर से शर्म भी करता है कि गुरुदेव ने मेरी खातिर इतना कष्ट उठाया है मैं क्यों न डायरी भरूँ!

मैं जब सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया तो वहाँ के प्रेमियों ने यही सवाल किया कि महाराज कृपाल ने संगत को डायरी रखने के लिए दी, लोगों का जीवन बनाया। आप इस बारे में क्या कहेंगे? मैंने उन्हें प्यार से कहा, ''मैं बहुत से प्रेमियों की डायरियाँ देखता हूँ लेकिन उनमें ज्यादातर वही गलतियाँ होती हैं जो गलतियाँ वे रोजाना करते हैं। मैं सदा यही कहा करता हूँ कि जिंदगी की एक गलती ही पूरी जिंदगी को खुष्क कर देती है। आज आपसे जो बुरा कर्म हो गया है वह कर्म कल न हो। आप दिल लगाकर भजन-अभ्यास करें।''

सन्त हमें प्यार करते हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हम उस प्यार को प्राप्त करें, उस पर चलने की कोशिश करें इसमें ही हमारा भला है। सन्त यह नहीं चाहते कि ये आत्माएं यहाँ रूलती रहें। सन्तों का मिशन होता है कि हमारे जीवन काल में प्रेमी अभ्यास में तरक्की करें और इनके अंदर शब्द की धारा प्रकट हो। टीचर वही कहलवा सकता है जिसके ज्यादा बच्चे पास हों। जिस टीचर के बच्चे पास न हों, हम उसे टीचर कैसे कहेंगे? सन्तों का भी यही मिशन होता है कि मेरे जीवन काल में मेरे बच्चे मेरी तालीम तक पहुँच जाएं, लेकिन हम सुस्त हैं।

मैंने आपको बताया है कि हम **अनुशासन** में नहीं रहते, उपदेश सुनकर भूल जाते हैं। सच्चे पातशाह सावन-कृपाल ने हमें अपनी याद

में बैठने का मौका दिया है। हम उनकी याद में अपने घरों के बंधन ढीले करके यहाँ आए हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हमने जो कुछ यहाँ सुना है उस पर अमल करें, अपना भजन-सिमरन करें और अपनी जिम्मेदारियों को निभाएं। एक-दूसरे से प्यार करते हुए, इज्जत से इस संसार में रहें।

सतसंगी में से नाम की, प्यार की खुशबू आए ताकि पड़ोसियों को भी पता लगे कि यह फलाने सन्त का सेवक है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो, गुरु नहीं उड़ते, गुरुओं को चेले उड़ाते हैं।'' गुरु हमेशा कहते हैं कि हमारी लाज हमारे चेलों के हाथ में है। सतपुरुष पवित्र होता है और वह चेलों से भी यही आशा रखता है कि ये जितने पवित्र होंगे, इनमें जितना प्यार होगा, उतनी ही मेरी शाबाशी होगी। आम कहावत हैः

माड़ा कुत्ता खसमें गाली

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई का बीज नाश नहीं होता।'' आप यह न सोचें कि संगत में कोई कमाई नहीं करता या **अनुशासन** में नहीं है। कमाई करने वाले और अनुशासन में रहने वाले बहुत हैं जो आपकी निगाह में भी होते हैं।

हमारे सच्चे पातशाह जब अपना चोला उतारकर अपने घर सच्चखंड चले गए तो क्या-क्या कौतुक हुए? दुनिया कोर्ट में जाकर खड़ी हो गई सबने यही कहा कि वे तो चले गए हैं। किसी ने कहा, ''वे तो मर गए हैं।'' अगर हम गुरु को जीवित समझें तो क्या हम आपस में लड़ सकते हैं? लेकिन उनमें से एक ने संसार में बाजू खड़ी करके कहा, ''जो लोग कहते हैं कि गुरु मर गया है, उन्हें कोर्ट में खड़ा करके उन पर मुकद्दमा चलाया जाए कि उन्होंने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया?''

गुरु न जन्मता है न मरता है। 'शब्द-रूप' ने जिस शरीर को भाग्य लगाना होता है वह उस शरीर में प्रकट हो जाता है। सन्त किसी को अपने शरीर के साथ नहीं जोड़ते, वे शब्द के साथ जोड़ते हैं। सन्त यह नहीं कहते

कि हम आपके गुरु हैं। आपका गुरु 'शब्द–नाम' है, शब्द अविनाशी है। शब्द न जन्मता है, न मरता है। शब्द सदा ही कायम है अगर हम कमाई करें तो क्या गुमराह हो जाएंगे? कबीर साहब कहते हैं:

गुरु करया है देह का सतगुरु चीन्हा नाहे।
लख चौरासी धार में फिर फिर गोता खाहे।।

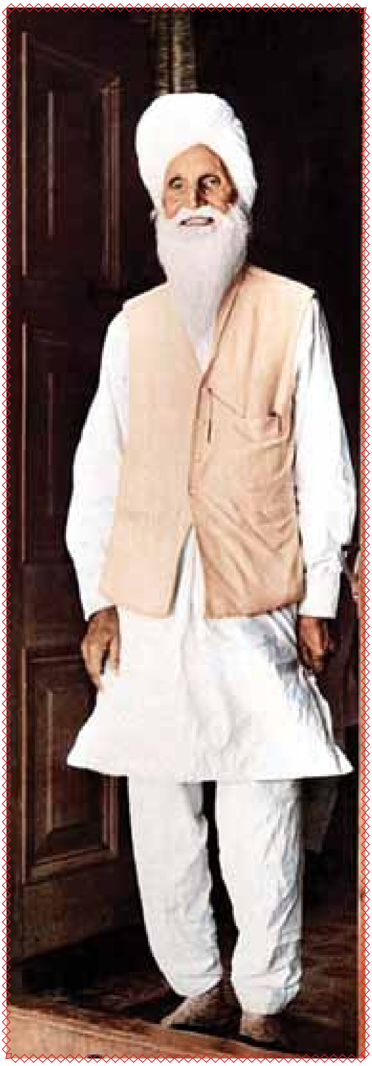

हमने अपनी देह से भी छुटकारा पाना है। हमने उस चीज को पकड़ना है जो सन्तों के अंदर काम कर रही है। गुरु देहधारी शब्द होता है, वह शब्द सतलोक से आकर सन्तों के अंदर प्रकट हो जाता है। परमात्मा प्यार है, सन्त प्यार रूप होते हैं।

सतगुरु सावन सिंह जी ने कहा, ''अगर आपसे भजन नहीं होता, मन के साथ संघर्ष नहीं होता तो आप सन्तों के साथ प्यार ही कर लें।'' अगर हमारा सन्तों के साथ प्यार है तो अन्त समय में वे हमारी आँखों के आगे आएंगे। अगर हम कोई चीज लहर के सुपुर्द कर दें तो वह समुंद्र की तह में जाकर बैठ जाती है। सन्त हमें वहीं लेकर जाएंगे जहाँ से वे आए हैं।

सन्त 'शब्द' में से आते हैं और हमें 'शब्द' में ही लेकर समा जाते हैं। आपने यहाँ जो सुना है उस पर अमल करना है। भजन–सिमरन करना है और अपने जीवन को शान्तमयी ढंग से बिताना है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

हमारे सतगुरु सावन-कृपाल ने हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है। हमारे ऊपर वह दया की है जो हम ब्यान नहीं कर सकते, हमें भक्ति का दान दिया है। सन्त अपने सेवकों को नाम का दान, अपनी जिंदगी का दान देते हैं। यह नाम न मूल्य देने से मिलता है, न माँगने से मिलता है और न ही हम इस नाम को खेतो में उगा सकते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैः

चल आगे उठ नाम जप
काल तुध न व्यापी नानक मिटे अपाध

उठो, उठकर नाम जपो। सारी रात सोकर न बिताएं जितनी शरीर को जरूरत है उतना ही सोएं। काल ने अपनी फौजें बनाई हुई हैं, पाँचों डाकू- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हर एक को घेरे रखते हैं। ये डाकू मौके की ताक में रहते हैं कि कब जीव को अपने कब्जे में करें।

अगर आप नाम की कमाई करेंगे, नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर 'शब्द' के साथ जुड़ेंगे तो ये आपको तंग नहीं करेंगे। हमारा मन जो चलाकियाँ करता है यह भी शान्त हो जाएगा।

अभ्यास के लिए यहाँ बैठें या अपने घर में बैठें, हर प्रेमी को पाँच पवित्र नाम अच्छी तरह याद कर लेने चाहिए। प्रेम-प्यार से आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरु करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

शेर और खरगोश की कहानी

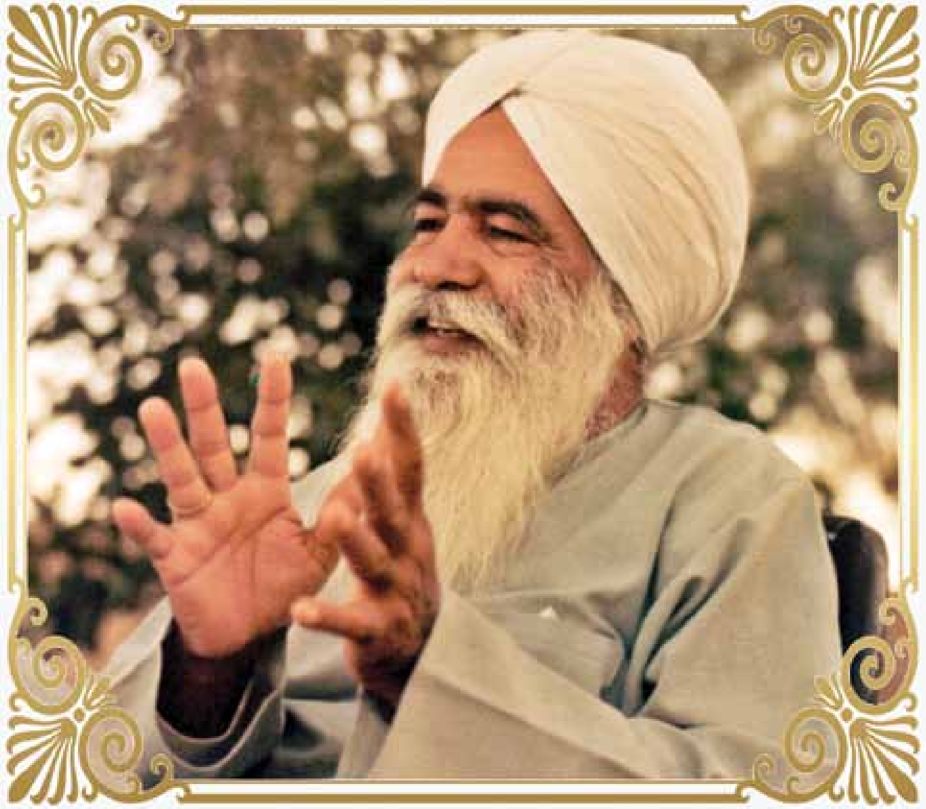

भाई गुरुदास जी कहते हैं कि हम परमात्मा को जोर–जबरदस्ती से प्राप्त नहीं कर सकते। कहीं हमारे दिल में यह ख्याल हो कि हम जोर–जबरदस्ती से या लोगों की मदद से परमात्मा को प्राप्त कर लेंगे।

खरगोश एक छोटा सा जानवर होता है और शेर बहुत ही ताकत वाला होता है। एक दिन ऐसा हुआ कि शेर जंगल में जानवरों को खा रहा था।

सब जानवरों ने इकट्ठे होकर शेर से कहा, ''आपके पेट की भूख को शान्त करने के लिए हममें से एक जानवर रोज आपके पास आ जाया करेगा। आप इस तरह सब जानवरों को मार–मारकर न फैंको।''

इस तरह से उन्होंने बारी बाँध ली और यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन छोटे खरगोश की बारी आई। खरगोश को जाने में देरी हो गई, आगे शेर भूख से बहुत व्याकुल हो रहा था। शेर ने खरगोश से कहा, ''तू इतनी देर से क्यों आया है? मैं भूखा मर रहा हूँ।'' खरगोश ने कहा, ''आपके राज्य में आपसे भी ज्यादा शक्तिशाली एक शेर और है। उस शेर ने मुझे पकड़ लिया था, मैं बहाने लगाकर बहुत मुश्किल से उससे छूटकर आपके पास आया हूँ। अब वह शेर आपके राज्य में बहुत उपद्रव मचाएगा अगर आपसे कोई उपाय होता है तो कर लें।''

शेर अहंकार में मस्त था उसने कहा, ''वह शेर कहाँ है, तू मुझे दिखाएगा?'' खरगोश ने कहा, ''मैं आपको दिखा देता हूँ वह एक बहुत बड़े कुँए में है। कुँए का पानी बिल्कुल शान्त था। खरगोश ने शेर से कहा कि आप इस कुँए के पास खड़े होकर देखें, वह शेर आपको दिखाई देगा। आप जैसा बोलेंगे वह शेर आपसे भी ज्यादा तेज बोलेगा।

जब शेर ने कुँए के ऊपर जाकर देखा तो उसे अपनी शक्ल दिखाई दी। वह बहुत घबराकर, गुस्से से बोला कि तू अंदर क्यों गया है? जैसे ही शेर बोला तो कुँए से आवाज ज्यादा तेज बाहर आई। शेर ने गुस्से में आकर और अपने बाहुबल के जोर से कुँए में छलांग लगा दी। शेर सिसकियाँ ले लेकर मर गया।

आप सोचकर देखें! अगर जोर से कुछ काबू किया जा सकता तो एक खरगोश, शेर को कैसे मार सकता था?

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

अगर यह सुख-दुख भोगते हुए सब कुछ प्रभु का समझते हुए, प्रभु की भक्ति करे, नाम की कमाई करे तो यह जल्दी दुखों से छुटकारा पा जाए।